उत्तरप्रदेश में जो कार्य आर्यसमाज द्वारा किया गया, 'शुद्धि और हिन्दू संगठन' विषयक अध्याय में उसपर विशद रूप से प्रकाश डाला गया है।

(६) आर्यसमाजों का विस्तार

सन् १९१२ से १९४७ तक उत्तरप्रदेश में आर्यसमाज का जो प्रसार व विस्तार हुआ, उसका एक महत्वपूर्ण क्षेत्र गढ़वाल था। इस क्षेत्र में वैदिक धर्म के प्रचार का श्रीगणेश करने वाले श्री जयानन्द भारतीय का उल्लेख सातवें अध्याय में किया जा चुका है। सन् १९११ में मसूरी में आर्यसमाज के सम्पर्क में आकर वह महर्षि दयानन्द सरस्वती के कट्टर अनुयायी हो गये थे और अनेक आर्यसमाजों में परिभ्रमण करते हुए बरेली आ गए थे। वहाँ वह डॉक्टर श्यानस्वरूप सत्यव्रत के सान्निध्य में आये और उनसे वैदिक धर्म के प्रचार की प्रेरणा प्राप्त की। उन्होंने गढ़वाल में आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार का निश्चय किया, और सबसे पहले सांवली पट्टी को अपना कार्यक्षेत्र बनाया। सन् १९१८ में बरेली के आर्योपदेशक पण्डित पुरुषोत्तम तिवारी के साथ वह ग्राम सेरा सावली गये और वहाँ प्रचार प्रारम्भ किया। पौराणिक लोगों के लिए उनके कार्य को सह सकना सम्भव नहीं था। उन्हें यह असह्य प्रतीत होता था, कि एक अब्राह्मण ब्राह्मणों की तरह यज्ञोपवीत पहनकर धर्म का उपदेश करने लगे। सब ओर उनका विरोध शुरू हो गया और पौराणिक लोग मारपीट के लिए भी तैयार हो गये। पण्डित पुरुषोत्तम तिवारी अच्छे हृष्ट-पुष्ट थे और लाठी चलाने में भी निपुण थे। उन्होंने शक्ति द्वारा विरोधियों का सामना करना चाहा, पर जयानन्द जी को यह पसन्द नहीं था। जहाँ सब कोई विरोधी ही विरोधी हों, वहाँ बल के प्रदर्शन से लाभ भी क्या था? निराश होकर जयानन्द जी बरेली लौट गये, और गढ़वाल में वैदिक धर्म के प्रचार के प्रथम प्रयत्न में उन्हें सफलता नहीं हुई। उन दिनों बीसवीं सदी का प्रथम महायुद्ध चल रहा था। जयानन्द जी अब सेना में भरती हो गये और सैनिक के रूप में कितने ही विदेशों की उन्होंने यात्रा की। सेना में होते हुए भी वह सत्यार्थप्रकाश और संस्कारविधि को सदा अपने साथ रखते थे। सन् १९२० में सेना से मुक्त होकर वह गढ़वाल वापस आ गए और वहाँ उन्होंने शिल्पकारों को "आर्य" बनाने तथा डोला-पालकी के प्रश्न को निमित्त बनाकर उन्हें सामाजिक समता के अधिकार दिलाने के लिए आन्दोलन प्रारम्भ किया। सन् १९१८ के घोर दुर्भिक्ष से पीड़ित लोगों की सहायता के लिए महात्मा हंसराज और स्वामी श्रद्धानन्द के नेतृत्व में आर्य स्वयंसेवकों के जो अनेक दल गढ़वाल गये थे, उनके कारण वहाँ के निवासियों को आर्यसमाज के कार्यकलाप से परिचय प्राप्त करने का अनुपम अवसर प्राप्त हो गया था; और कुछ लोग उससे प्रभावित भी होने लग गये थे। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की ओर से वहाँ अनेक स्कूल भी खोल दिए गये थे, जिन द्वारा भी जनता को वैदिक धर्म का परिचय प्राप्त होता रहता था। इन स्कूलों और पाठशालाओं की संख्या १५ के लगभग थी। उनका संचालन पण्डित अर्जुनदेव भारती द्वारा किया जा रहा था। नजीबाबाद आर्यसमाज के प्रचारक व उत्साही सदस्य भी गढ़वाल के समीपवर्ती क्षेत्र में प्रचार-कार्य में तत्पर थे। मोहन आश्रम, हरिद्वार के पण्डित देवानन्द (स्वामी सच्चिदानन्द) भी गढ़वाल में कार्य कर रहे थे। पर उस क्षेत्र का वास्तविक व ठोस कार्य उन शिल्पकार लोगों में था, जिन्हें अछूत समझा जाता था। श्री जयानन्द

Scanned by CamScanner